Purva Mimaansa
A Multi-discipinary Bi-annual Research Journal
(Peer Reviewed, Refereed)

Vol. 10 No. 1-2, March-Sep. 2019
ISSN : 0976-0237
UGC Approved Journal No. 40903
Impact Factor 3.765

देवल ग्राम स्थित वीर–आसन विष्णु प्रतिमा का विश्लेषणात्मक अध्ययन

'अभिनव तिवारी

शोध सार :

भारत में देव प्रतिमाओं की पूजा परम्पराओं से पूर्व लोक धर्म में देवताओं, प्राकृतिक शक्तिओं की प्रतिक के रूप में पूजा तथा धार्मिक यज्ञानुष्ठान ही हिन्दू धर्म के पूजा परम्परा के आधार रहे हैं । गढ़वाल में ही नही वरन सम्पूर्ण उत्तराखण्ड में कला का स्वरुप मुख्यतयाः धार्मिक रहा है । कला के विकास के लिए तत्कालीन शासकों की सुदृढ़ राजनितिक अवस्था और शंकराचार्य के धार्मिक पुनरोत्थान का आन्दोलन विशेष सहायक रहे हैं । मध्य हिमालय के सम्पूर्ण क्षेत्र में शैव एवं शक्त धर्म अत्यधिक प्रभावशाली रहे हैं, किन्तु साथ ही भगवत धर्म का भी यहाँ पर्याप्त लोकप्रियता प्राप्त हुई है । विश्व प्रसिद्ध तीर्थ बदरीनाथ मध्य हिमालय के गढ़वाल में ही स्थित है, जो भागवत साम्प्रदाय का एक प्रसिद्ध तीर्थ है । गढ़वाल में विष्णु की अनेक प्रतिमायें प्राप्त हुई हैं । गढ़वाल बहुमूल्य धरोहरों से समृद्ध है किन्तु जनमानस में ज्ञान, संरक्षण एवं उपयोगिता के अभाव में हमारी प्राचीन एवं ऐतिहासिक धरोहरें नष्ट होने के कगार पर हैं। इस तरह विष्णु की "वीर–आसन" प्रतिमाओं का निर्माण भी गढ़वाल में हुआ है। शोधार्थी द्वारा शोध सर्वेक्षण कार्य के दौरान विवेच्य प्रतिमा संज्ञान में आया जो ज्ञान, संरक्षण एवं उपयोगिता के अभाव में नष्ट होने की अवस्था में पहुँच गया है किन्तु फिर भी गढ़वाल की एक दुर्लभ प्रतिमा है। प्रस्तुत शोधपत्र में गढ़वाल हिमालय में स्थित देवल गाँव की उमा–महेश्वर प्रतिमा का प्रतिमा शास्त्रीय विश्लेषण किया गया है ।

प्रमुख शब्द : गढ़वाल, रुद्रप्रयाग, बसु–केदार, देवल ग्राम मंदिर समूह, लक्ष्मी–नारायण, वीर–आसन, ललितासन, वाम–ललितासन ।

हिन्दू त्रिदेवों(ब्रह्मा, विष्णु, महेश) में विष्णु को जगत पालनकर्ता कहा गया है द्य हिन्दू धर्म में शिव के बाद विष्णु सर्वाधिक लोकप्रिय देवता रहे हैं द्य विष्णु का स्थान ऋग्वेद में साधारण था किन्तु वैदिक साहित्य पुरानों, महाकाव्यों, ब्राह्मणों में विष्णु को महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है द्य कई शताब्दियों के पश्चात् विष्णु के अनुयायिओं का एक सम्प्रदाय विकसित हुआ, जिसे पांचरात्र अथवा भागवत धर्म के नाम से जाना गया।

जिसमे वासुदेव कृष्ण का विष्णु और नारायण से समन्वय स्थापित किया गया द्य विष्णु के अनुयायी भागवत साम्प्रदाय या वैष्णव साम्प्रदाय के कहलाते हैं।

मध्य हिमालय के सम्पूर्ण क्षेत्र में शैव एवं शक्त धर्म अत्यधिक प्रभावशाली रहे हैं, किन्तु साथ ही भागवत धर्म का भी यहाँ पर्याप्त लोकप्रियता प्राप्त हुई है । विश्व प्रसिद्ध तीर्थ बदरीनाथ मध्य हिमालय के गढ़वाल में ही स्थित है, जो भगवत संप्रदाय का एक प्रसिद्ध तीर्थ है ।
भागवत साम्प्रदाय के विकसित रूप में विष्णु के पांच (5) रूपों की मान्यता है।

'शोध छात्र, इतिहास एवं पुरातत्व विभाग, हे०न०ब० गढ़वाल केन्द्रीय विश्वविद्यालय, श्रीनगर गढ़वाल, उत्तराखण्ड

Purva Mimaansa
A Multi-discipinary Bi-annual Research Journal
(Peer Reviewed, Refereed)

Vol. 10 No. 1-2, March-Sep. 2019
ISSN : 0976-0237
UGC Approved Journal No. 40903
Impact Factor 3.765

1. पर 2. व्यूह 3. विभव 4. अंतर्यामी
5. अर्चा

इन्हीं पांच रूपों से संबंधित विष्णु प्रतिमाओं का निर्माण हुआ । अतएवं इनसे संबंधित विष्णु प्रतिमायें चार (4) रूपों में पाई जाती है द्य वैखानस आगम में विष्णु के ध्रुववेरों का उल्लेख है ।

विष्णु के योग, भोग, वीर, तथा अभिचारिक प्रतिमा का उल्लेख गोपीनाथ राव1 ने भी किया है ।

1. योग 2. भोग 3. वीर 4. अभिचारीक

तत्पश्चात मुद्राओं के आधार पर विष्णु प्रतिमाओं को तीन श्रेणी में रखा जाता है ।

1. स्थानक 2. आसन 3. शयन

पुनः गुणों के आधार पर तीन श्रेणियों में विभाजित किया जाता है ।2

1. उच्च 2. मध्यम 3. निम्न

इस तरह विष्णु की समस्त प्रतिमायें 36 प्रकार की निर्मित की जाता है ।

4′3′3 = 36

भारत में सगुणोंपासना के फलस्वरूप देवी–देवताओं के प्रतिमाओं का निर्माण होना ईसापूर्व से प्रारम्भ हो गया था । तत्पश्चात कुषाण काल से लेकर हर्ष के काल तथा धार्मिक कला के क्षेत्र में उल्लेखनीय क्रांति का प्रादुर्भाव हुआ । बहुदेवतावाद तथा पौराणिक कथानको का शिल्पांकन व्यापक रूप से हुआ । गढ़वाल प्राचीन काल से ही भारतीय धर्म भावना में पवित्र क्षेत्र रहा है । महाभारत में गंगा, पञ्च प्रयाग, बद्रीनाथ का वर्णन मिलता है ।

विष्णु की आसन प्रतिमाओं का निर्माण कुषाण काल से प्रारम्भ हो गया था । कुषाण काल में निर्मित विष्णु की दो आसन प्रतिमा मथुरा से प्राप्त हुई हैद्य3 इस तरह विष्णु के आसन प्रतिमा का निर्माण सम्पूर्ण भारतवर्ष में होता रहा । जो कुषाण काल से लेकर लगभग 13–14 वीं शताब्दी तक अनवरत निर्मित होती रही । उत्तराखण्ड में कत्युरी शासकों ने वैष्णव धर्म की प्रगति में महत्वपूर्ण योगदान दिया है ।

विवेच्य प्रतिमा उत्तराखण्ड राज्य के रुद्रप्रयाग जनपद के जिला मुख्यालय से लगभग 40 किमी० दूर बसु–केदार क्षेत्र के वीरों–देवल नामक जगह के देवल (30026′51 एवं 7903′55) नामक ग्राम में समुद्रतल से 1240 मीटर ऊँचाई पर स्थित है।

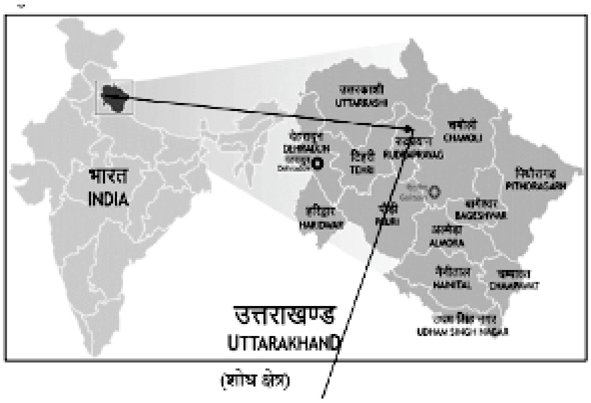

Purva Mimaansa
A Multi-discipinary Bi-annual Research Journal
(Peer Reviewed, Refereed)

Vol. 10 No. 1-2, March-Sep. 2019
ISSN : 0976-0237
UGC Approved Journal No. 40903
Impact Factor 3.765

(शोध क्षेत्र का उपग्रहीय मानचित्र)

देवल ग्राम से प्राप्त विष्णु की इस प्रतिमा का स्वरुप प्रतिमा शास्त्रीय ग्रंथों में उद्धरित विवरणों के अनुसार प्रतिमा शास्त्र की दृष्टीकोण से विष्णु के मानवस्वरूप प्रतिमा के अंतर्गत 'आसन मुद्रा' एवं 'वीर रूप' के समानता रखती हुई प्रदर्शित है । जिसे 'वीर–आसन' रूप की प्रतिमा कहा जाता है ।

वीरासन प्रतिमा में विष्णु को सिंहासनासीन होना चाहिये द्य उनका एक हाथ 'सिंहकर्ण मुद्रा'4 में होना चाहिए द्य उनका बायाँ पैर मुदा हुआ एवं दाहिना पैर कुछ फैला हुआ होना चाहिए द्य घुटने मुड़े हुए भू–देवी एवं लक्ष्मी देवी का भी अंकन होना चाहिये ।

इस प्रकार देवल ग्राम से प्राप्त विष्णु की यह प्रतिमा वीरासन श्रेणी के काफी साम्यता रखती हुई प्रतीत होती है ।

देवल ग्राम से प्राप्त विष्णु की यह वीरासन प्रतिमा 38′20′07 सेमी० स्लेटी प्रस्तर से निर्मित है ।

इस प्रतिमा में विष्णु गरुणासीन चतुर्भुजी प्रदर्शित हैं । विष्णु 'वाम–ललितासन मुद्रा'5 में एवं द्विभुजी लक्ष्मी जी विष्णु जी के बायीं जांघ पर 'ललितासन मुद्रा'6 में विराजमान है।

विवेच्य प्रतिमा में प्रतिमा शास्त्रीय लक्षणों में विष्णु जी को चतुर्भुजी एवं आभामंडल रहित प्रदर्शित हैं। विष्णु जी पृष्ठ दक्षिण हस्त में चक्र एवं अग्र दक्षिण हस्त में शंख धारण किये हुए प्रदर्शित हैं । विष्णु के पृष्ठ वाम हस्त में पद्म एवं अगर वाम हस्त में लक्ष्मी जी के कमर/कटी को पकड़े हुए प्रदर्शित है । द्विभुजी लक्ष्मी जी का दक्षिण हस्त विष्णु जी के दक्षिणी स्कंध को पकड़े हुए एवं वाम हस्त पद्म लिए हुए प्रदर्शित है ।

विवेच्य वीर–आसन विष्णु प्रतिमा में आभूषणीय विशेषताओं का भी प्रदर्शन होता है । जिनमें विष्णु जी किरीट मुकुट धारण किये हुये प्रदर्शित हो रहे हैं । गले में कंठाहार एवं ग्रैवेयक, कानों में कुण्डल, यज्ञोपवीत, हाथों में कंगन एवं भुजाओं में बाजूबन्द/केयूर, तथा कमर पर धोती एवं उदरबन्ध, करधनी, पैरों में कड़ा पहने हुए प्रदर्शित हैं ।

इसी तरह लक्ष्मी जी केशमुकुट युक्त, कानों में कुण्डल, नाक में बाली, गले में हार एवं ग्रैवेयक, हाथों में कंगन, कमर में धोती एवं कमरबन्द/करधनी, पैरों में कड़ा एवं पायल, पैरों की अँगुलियों में बिछुआ/मुदरी पहनी हुई प्रदर्शित हैं ।

इसी तरह द्विभुजी गरुण दोनों हाथो से आसन को उठाये/पकड़े हुए प्रदर्शित है द्य गरुण के हाथों में कंगन, भुजाओं में भुजबंद/केयूर, कमर में धोती एवं कमरबन्द, पैरों में मोटा कड़ा पहने हुए प्रदर्शित हैं ।

Vol. 10 No. 1-2, March-Sep. 2019
ISSN : 0976-0237
UGC Approved Journal No. 40903
Impact Factor 3.765

वीरासन विष्णु प्रतिमा भारत के अनेक स्थलों से प्राप्त हुई है । अय्होल 7 के पाषण चित्रणों में यह प्रतिमा दृष्टव्य है । उत्तराखंड में में शोधार्थी को शोध कार्य के दौरान बामन सुयाल, अल्मोड़ा एवं देवल ग्राम, रुद्रप्रयाग इत्यादि से भी प्राप्त हुई, जिसे शोधार्थी ने प्रकाश में लाया है ।

यद्यपि यह प्रतिमा एक विशिष्ट प्रतिमा है, किन्तु इस प्रतिमा का विश्लेषणात्मक अध्ययन करने पर शिल्पकार के द्वारा शिल्पकारी के उच्च अंकन का अभाव दृष्टिगत होता है । इस प्रतिमा में शिल्पकार ने प्रतिमा शास्त्रीय मानक के अनुरूप शिल्पकारी नही किया है । शिल्पकार ने इस प्रतिमा का निर्माण साधारण 'लक्ष्मी–नारायण प्रतिमा' समझ कर किया है । किन्तु विष्णु के इस तरह की प्रतिमा को आसन श्रेणी के अंतर्गत रूपों के आधार पर 'वीर श्रेणी' में रखा जाता है ।

शिल्पकार के शास्त्रीय अज्ञानता की वजह से विवेच्य प्रतिमा में शिल्पकार के द्वारा विभिन्न कमियों को देखा जा सकता है । शारीरिक पक्ष में देखा जाये तो, विशु एवं लक्ष्मी दोनों के चेहरे की भाव–भंगिमा नदारत महसूस हो रही है द्य चेहरे का आकार–प्रकार सुन्दरता रहित एवं बेडौलपन को प्रदर्शित कर रहा है । गले एवं कान की बनावट निम्न है । हाथ, कुहनी, एवं पंजे सीधे–सपाट एवं जालीनुमा प्रदर्शित हैं । इसी तरह पैर के घुटने, पंजे एवं अंगुलियाँ भी सूखे तने के सामान एवं सुखी टहनियों के समान प्रदर्शित हो रहे हैं। जो किसी भी तरह से शिल्पकर के तकनिकी ज्ञान की उच्चता को प्रदर्शित कर सके । गरुण के शारीरक पक्ष का शिल्पांकन भी निम्न कोटि का है, जिसे देखकर महसूस किया जा सकता है । इसी तरह आभूषणीय विशेषताओं पर पक्ष डालते हैं तो, आभूषणों की सजीवता, नक्कासीपन, बरीकपन का अभाव है द्य आभूषणों को देखकर सिर्फ अन्दाजवश उनको पहचान करते है, जो शिल्पकार के निम्न शिल्पकारी को प्रदर्शित करता है । शारीरिक एवं आभूषणीय दोनों पक्षों को सिर्फ अंदाजवश ही उनकी उपस्थित को महसूस कर सकते हैं किन्तु सटीकतापूर्वक कदापि भी नहीं । जिस शिलाखण्ड पर प्रतिमा उत्कीर्ण की गयी है उसमे इस वीर–आसन रूप के अन्य सहायको को भी निर्मित होना चाहिए था, जिनका सर्वथा अभाव है । जो शिल्पकार के अज्ञानता को प्रदर्शित करता है ।

अपने अवसहान काल में इसी तरह की प्रतिमाओं का निर्माण होने लगता है, जहां मानकों के अनुरूप शिल्पकारी नही किया जाता सिर्फ कार्यपूर्ति ही किया जाता है । इससे शिल्पकार के शिल्पकारी की अनेक कमियां उजागिर होने लगती हैं, साधारणतः देखकर ही समझा जा सकता है। यह प्रतिमा गुणों के आधार पर 'निन्म श्रेणी' के अंतर्गत रखा जायेगा ।

इस तरह से विवेच्य प्रतिमा को देख एवं समझ कर तथा प्रतिमा शास्त्रीय लक्षणों द्वारा विश्लेषणात्मक एवं तुलनात्मक अध्यायानुसार प्रतिमा के निर्मित होने तिथिक्रम 13–14 वीं शताब्दी मध्य मानी जा सकती है ।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. राव, टी० ए० जी० 'एलिमेंट्स ऑफ हिन्दू आईक्नोग्राफी' वोल्यूम–1, प्लेट–1, पृ० 80–96 ।
2. पूर्वोक्त, पृ० 78–80 ।

Vol. 10 No. 1-2, March-Sep. 2019
ISSN : 0976-0237
UGC Approved Journal No. 40903
Impact Factor 3.765

3. दिसकाल्कर,डी० बी०, 'स्कल्पचर्स इन द मथुरा म्यूजियम', जर्नल ऑफ़ यू० पी० हिस्टोरिकल सोसाइटी, वोल्यूम–5, प्लेट–4 ।
4. गुप्ता,एस०पी० एण्ड अस्थाना,शशि प्रभा, 2007 'एलिमेन्ट ऑफ इंडियन आर्ट इनक्लूडिंग टेम्पल आर्किटेक्चर,आईकनोग्राफी एण्ड आईकनोमेट्री (पर्सपेक्टिव ऑफ इंडियन आर्ट एण्ड आर्कियोलोजि,नॉ–04), द्वितीय संस्करण, नई दिल्ली, पृ० 132 ।
5. पूर्वोक्त, पृ० 141 ।
6. पूर्वोक्त, पृ० 141 ।
7. शुक्ल, द्विजेन्द्रनाथ 'प्रतिमा विज्ञान', पृ० 254 ।

वीरासन विष्णु प्रतिमा, देवल ग्राम, रुद्रप्रयाग, उत्तराखण्ड
(चित्र स्वत; शोधार्थी द्वारा)